अध्याय : 5

प्राचीन भारतीय मुद्रा प्रणाली में देशी एवं विदेशी तत्वों का सामंजस्य

भारत को सदैव यह आन्तरिक विश्वास था कि उसकी संस्कृति विदेशी शासकों या आक्रान्ताओं से अधिक उत्तम है, प्रायः ऐसा हुआ भी जो भी विदेशी भारत आये वे भारतीय समाज के अभिन्न अंग बन गये। निःसंदेह देशी एंव विदेशी संस्कृतियों के सहअस्तित्व ने उनको एक दूसरे से सामंजस्य स्थापित करने का सुअवसर प्रदान किय। भारतीय मुद्रा के इतिहास में भी देशी एवं विदेशी तत्वों के बीच होने वाली क्रिया–प्रतिक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उल्लेखनीय है कि विनिमय के मौद्रिक स्वरूप, मुद्रा निर्माण तथा मुद्राओं पर अंकित चिह्नों एवं आकृतियों की निर्माण परम्परा के विकास को समय–समय पर आने वाली विदेशी पद्धतियों एवं परमपराओं (हिन्द–यवन, शक, पह्लव, कुषाण आदि) ने सन्दर्भित एवं प्रभावित किया। भारतीय आहत सिक्कों एवं यूनानी सिक्कों के मध्य कोई तारतम्यता दिखायी नहीं देती, इन दोनों मुद्राओं में मौलिक अन्तर पाया जाता है। यूनानी सिक्कों के अग्रभाग पर राजा की आवक्ष आकृति तथा पृष्ठभाग पर किसी देवी–देवता का चित्रांकन प्राप्त होता है, जबकि आहत सिक्कों में ऐसा नहीं है। यूनानी सिक्कों पर लेखांकन मिलता है और आहत सिक्कों पर केवल प्रतीक चिह्नों का चित्रांकन ही प्राप्त होता है। यूनानी सिक्के मिश्रित धातु के बनाये जाते थे जबकि आहत सिक्के चाँदी या ताँबे से ही बनाये गये। यूनानी सिक्कों पर दोनों ओर अंकन प्राप्त होता है लेकिन आहत सिक्कों पर प्रारम्भ में एक ओर ही चित्रांकन होता था। यूनानी सिक्के वर्तुलाकार, अण्डाकार या वृत्ताकार हैं लेकिन आहत सिक्कों का भार समान करने लिए किनारों पर

काट–छाँट की जाती थी इसलिए यह निश्चित आकार के नहीं हैं। यूनानी सिक्कों का भार सामान्तया 66 ग्रेन है, जबकि आहत सिक्कों का भार 56 मिलता है। इन असमानताओं को देखते हुए प्रारम्भिक भारतीय मुद्रा पर किसी विदेशी प्रभाव को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यद्यपि यूनानी सिक्कों के पूर्व ईरानी सिग्लोई भारतीय निर्माण विधि से तैयार किये जाते थे, यह सिक्के आहत मुद्राओं के सदृश थे। इनमें अन्तर केवल यही था कि सिग्लोई पर खरोष्ठी में लेख मिलता है, आहत सिक्के चित्रांकित होते थे। यूनानी सिक्कों के आधार पर भारतीय सिक्कों को भी ढाल कर तैयार किया जाने लगा। इसी विधि का अनुसरण शकों तथा कुषाणों ने भी किया। कनिष्क तथा हुविष्क ने यूनानी देवी–देवताओं को अपनी मुद्राओं पर चित्रांकित किया। द्वितीय शताब्दी ई. तक यूनानी सिक्कों का प्रभाव भारतीय सिक्कों पर पड़ता रहा। दूसरी ओर यूनानी मुद्रायें भी भारतीय मौद्रिक तत्वों से प्रभावित हुए बिना न रह सकीं, खरोष्ठी तथा ब्राह्मी लिपि का प्रयोग, भारतीय सिंह का अंकन, भारतीय देवी–देवताओं का अंकन, अपोलोडोरस के सिक्कों पर शिववाहन नन्दी का अंकन आदि इसके उदाहरण माने जा सकते हैं। शक मुद्राओं पर लक्ष्मी का अंकन, ऐजेस को पलथी मारे हुए भारतीय मुद्रा में दिखाया जाना भारतीय अनुकरण के रूप में देखा जा सकता है। कुषाण मुद्रायें भी भारतीय तत्वों को समाहित किये हुए हैं। इनकी मुद्राओं पर शिव, नन्दी, त्रिशूल, वज्र, चक्र, परशु, कार्तिकेय, बुद्ध का अंकन सहज ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही साथ काचगुप्त की चक्रध्वज शैली, समुद्रगुप्त की ध्वजधारी शैली तथा राजा–राजमहिषी शैली की मुद्रायें कुषाणों से प्रभावित हैं।

हिन्द–यवन सोने के सिक्कों को "स्टेटर" कहा जाता था मिनेण्डर के उपरान्त इसका प्रचलन बन्द हो गया। हिन्द–यवन के चाँदी के सिककों को "ड्रैक्म" कहा जाता था जिसे भारतीयों ने "द्रम" कहा, इसी का विकृत रूप "दाम" वर्तमान में पैसे के अर्थ में प्रयुक्त होता है। भारत में स्टेटर के स्थान पर रोमन स्वर्ण मुद्रा "डेनेरियस" को अपनाया गया, जिसे कालान्तर में

गुप्त लेखों में "दीनार" की संज्ञा प्रदान की गयी। यूनानी ड्रैक्म 66 ग्रेन का तथा ईरानी ड्रैक्म 84 ग्रेन का था। डेमेट्रियस (220–175 ई.पू.) पहला यूनानी शासक था, जिसने 183 ई.पू. में सिन्ध तथा पंजाब पर आक्रमण करके भारत में इण्डो–ग्रीक राज्य की स्थापना की तथा शाकल को अपनी राजधानी बनाया। इसके द्वारा जारी मुद्राओं पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि मे लेखांकन मिलता है। इसके सिक्कों पर वज्र धारण किये पुरूष का चित्रांकन तथा खरोष्ठी लिपि में "अपराजितस" का लेखांकन प्राप्त होता है।[1] वज्र का अंकन, खरोष्ठी लिपि का प्रयोग तथा भारतीय उपाधि "महाराजा" का लेखांन आदि भारतीय तत्वों का अनुशरण किया गया है। पेण्टालिओन की ताम्र मुद्राओं के अग्रभाग पर भारतीय वेश–भूषा में दाहिने हाथ में फूल लिए हुए, नृत्य करती लड़की का चित्रांकन प्राप्त होता है, ब्राह्मी लिपि में "रजनेपतलेबस" लेखांकित है।[2] कुमारस्वामी ने नृत्य करती हुई लड़की को "लक्ष्मी" माना है। पृष्ठभाग पर अयाल विहीन सिंह या तेन्दुआ का चित्रांकन है यूनानी लिपि में "बेसिलिओस पेण्टालिओण्टोस" लेखांकित है। एगाथोक्लीज के कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर पेण्टालिओन के सिक्कों की भाँति लड़की अथवा लक्ष्मी का चित्रांकन है; ब्राह्मी लिपि में "अगथुक्लयस" लेखांकित है।[3] कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर तारों से आच्छादित स्तूप का चित्रांकन है और पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में हितजसम लेखांकित है।[4] इसमें सन्देह नहीं कि स्तूप तथा तारों या नक्षत्रों का अंकन भारतीय सिक्कों की विशेषता का अंश है। स्तूप, बौद्ध धर्म का प्रतीक माना गया है। हिन्द–यवन सिक्कों पर स्पूत का चित्रांकन भारतीय तत्वों से उनके सामंजस्य को उद्‌घाटित करता है। कालान्तर में मिनेण्डर द्वारा बौद्ध धर्म अपना कर बौद्ध हो जाने की घटना इसी क्रम में देखा जा सकता है। एगाथोक्लीज के कुछ अन्य सिक्कों के पृष्ठभाग पर घेरे में वृक्ष का अंकन प्राप्त होता है[5], जो भारतीय मोहरों तथा सिक्कों का प्रिय विषय रहा है। घेरे में वृक्ष का चित्रांकन सिन्धु सभ्यता कालीन पुरास्थल मोहनजोदड़ों से प्राप्त होता है।[6] घेरे में वृक्ष का चित्रांकन वृक्षों के पूजनीय होने

से सम्बन्धित है। वृक्षों की पूजा का उल्लेख ऋग्वेद[7], अर्थववेद[8], ऐतरेय ब्राह्मण[9], छांदोग्य उपनिषद[10] आदि में प्राप्त होता है। इसके उपरान्त भारतीय आहत सिक्कों पर घेरे में वृक्ष का चित्रांकन सामान्य विशेषता रही है। भारतीय धर्म एवं सिक्कों के इस प्रतिष्ठित तत्व को हिन्द–यवन शासकों ने भी अपने सिक्कों पर स्थान दिया। एगाथोक्लीज[11] के कुछ सिक्के अफगानिस्तान के आइखानम नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं, जिसका अध्ययन पॉल बार्नाड ने किया। इन सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में "बेसिलिओस एगाथोक्लिअस" तथा पृष्ठभाग पर दो पुरूष आकृति को आमने–सामने खड़ा हुआ भारतीय वेश–भूषा में दर्शाया गया है। यह आकृतियां टखने तक धोती व उत्तरीय और छोटे जूते धारण किये हुए हैं।[13] इन सिक्कों के अग्रभाग पर गदा के साथ एक अन्य यन्त्र भी दर्शाया गया है, बर्नाड के अनुसार यह बसुला या कुल्हड़ी है।[14] इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर मण्डल तथा चक्र का अंकन प्राप्त होता है। उपरोक्त चित्रांकन के आधार पर बर्नाड इसे मानव सदृश विष्णु एवं शिव का अंकन मानते हैं।[15] इन सिक्कों के अग्रभाप पर हल के अंकन वाली आकृति निश्चित रूप से "बलराम" (संकर्षण) होना चाहिए।[16] उल्लेखनीय है कि विष्णु का मानव सदृश चित्रांकन पांचाल शासक विष्णुमित्र के सिक्कों पर मिलता है।[17] कुछ भी हो एगाथोक्लीज के इन सिक्कों से यह सिद्ध हो जाता है कि हिन्द–यवनों में संकर्षण तथा वासुदेव महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, यवन दूत हेलियोडोरस का बेसनगर स्तम्भ धर्मचक्र के चित्रांकन के साथ "महरजस ध्रमिकस मैनण्डरस" का लेखांकन प्राप्त होता है। मिनेण्डर के कुछ अन्य सिक्कों के पृष्ठभाग पर "उल्लू" का चित्रांकन तथा अग्रभाग पर पल्लस का अंकन प्राप्त होता है।[19] हिन्दूधर्म के अन्तर्गत वैभव एवं समृद्धि की देवी लक्ष्मी का वाहन "उल्लू" माना गया है। इस दृष्टि से भी मिनेण्डर के सिक्के भारतीय तत्वों से प्रभावित प्रतीत होते हैं। हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों पर हेराक्लीज का चित्रांकन गदा[20] के साथ किया गया है। समान्तमया कई हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों पर नग्न हेराक्लीज को सिंह–चर्म के

साथ चित्रांकित किया गया है। इस अंकन की तुलना एगाथोक्लीज के उन सिक्कों से की जा सकती है, जिसमें वासुदेव कृष्ण को हाथ में चक्र लिए दर्शाया गया है। यह सिक्के हेराक्लीज के साथ कृष्ण का तादात्म्य स्थापित करते हैं।[22] यह मौद्रिक साक्ष्य द्वितीय–प्रथम शताब्दी ई.पू. अफगानिस्तान में वैष्णव धर्म की लोकप्रियता को उद्‌घाटित करते हैं।[23] हिन्द–यवनों व भारतीयों के मध्य मौद्रिक क्षेत्र में ही नहीं भोग, तपस्या सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अन्तर्सम्बन्ध स्थापित हुए।

मौर्य साम्राज्य व उसके बाद शुंग साम्राज्य ने समस्त छोटे बड़े राज्यों को एक सूत्र में बाँधकर रखा था। लेकिन इनके पतन के साथ ही पुनः राजनैतिक विकेन्द्रीकरण प्रारम्भ हो गया। अनेक जनपदों तथा गणराज्यों ने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करके अपनी–अपनी मुद्रायें भी जारी कीं। ऐसे जनपदों व गणराज्यों में तक्षशिला, कौशाम्बी, मथुरा, कोशल, पांचाल, एरण, उज्जैन, विदिशा, महिष्मती तथा यौधेय, कुणिन्द, औदुम्बर, आर्जुनायन व मालव का नाम लिया जा सकता है। इन राज्यों के पूर्व तक भारतीय सिक्के जैसे आहत सिक्के व ढली हुई ताम्र मुद्रायें लेख विहीन थीं। लेकिन इन सिक्कों पर ब्राह्मी व खरोष्ठी लिपि में लेख प्राप्त होने लगा। इन भारतीय सिक्कों पर लेखांकन हिन्द–यवन सिक्कों के अनुकरण पर किया गया। मुद्रा निर्माण की ठप्पा प्रणाली का प्रारम्भ तक्षशिला से ही हुआ, यहाँ यूनानी, मौर्य, हिन्द–यवन, शक, पह्लव कुषाण आदि सभी का शासन था और सभी के सिक्के यहाँ से प्राप्त होते हैं।[24]

शकों ने पश्चिमोत्तर भारत से हिन्द–यवन सत्ता को समाप्त करके तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र उज्जैन जैसे क्षेत्रों पर अपना शासन स्थापित कर लिया। तक्षशिला के प्रथम शक क्षत्रप मोग या मोयस की एक मुद्रा के अग्रभाग पर बांयें हाथ में लम्बा त्रिशूल लिये पोसीडन का चित्रांकन है जिसके नीचे नदी देवता को दर्शाया गया है। जबकि पृष्ठभाग पर एक वृक्ष के नीचे खड़ी हुई नारी की आकृति है। उल्लेखनीय है कि त्रिशूल आदि देवता शिव का प्रतीक माना गया है। मथुरा के प्रथम शक क्षत्रप रज्जुबुल की मुद्रा पर हेराक्लीज को खड़ा हुआ चित्रांकित किया

गया है, जिसका दाहिना हाथ बाहर को निकला हुआ दर्शाया गया है और बांयें हाथ में सिंह–चर्म है। खरोष्ठी लिपि में "महाक्षत्रपस अप्रतिचक्रस रज्जुलस"[25] लेखांकित है। एलन के अनुसार इसके अतिरक्त अन्य सिक्कों के पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में "अप्रतिहतचक्रस क्षत्रपस रज्जुलस"[26] लेखांकित है। यहाँ अप्रतिचक्रस या अप्रतिहतचक्रस उपाधि विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि विष्णु के एक हजार नामों की सूची में "अप्रतिरथ" नाम भी आया है।[27] यहाँ हरोक्लीज के चित्रांकन के साथ अप्रतिचक्रस का लेखांकन रज्जुबुल के वैष्णव धर्म की ओर झुकान को प्रदर्शित करता है। हिन्द–यवन तथा हिन्द–ससैनियन सिक्कों पर खड़े हुए शेर का चित्रांकन मिलता है।[28] इस अंकन का सम्बन्ध शक्ति के अवतार बुद्ध या विष्णु के नरसिंहावतार से जोड़ा जा सकता है। जे.एन. बनर्जी ने इलाहाबाद में भीटा तथा वैशाली में बसाढ़ नामक स्थलों से मिली मोहरों पर नरसिंहावतार के प्रतीक शेर के चित्रांकन को खोजा है।[29] क्षहरात वंश के संस्थापक भूमक के कुछ सिक्कों के पृष्ठभाग पर भी सिंह, चक्र, स्तम्भ आदि का चित्रांकन मिलता है। नहपान के सिक्कों के पृष्ठभाग पर भी वज्र, बाण के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लिपि में "राजाक्षहरातस नहपानस" तथा खरोष्ठी लिपि में "राज्ञो क्षहरातस नहपानपस" लेखांकन प्राप्त होता है।[30] कार्दमक वंश के संस्थापक चष्टन द्वारा जारी मुद्राओं पर ब्राह्मी, खरोष्ठी लिपि में लेखांकन के साथ–साथ चैत्य, तारे, चन्द्र आदि का चित्रांकन भी प्राप्त होता है। डी.सी. सरकार का मानना है कि इसके सिक्कों पर चैत्य का अंकन संकेत देता है कि चष्टन ने वह क्षेत्र पुनः विजित कर लिए जिसे नहपान की पराजय पर गौतमीपुत्र शातकर्णि ने जीते थे। जूनागढ़ से प्राप्त मुद्रायें भी यही संकेत देती हैं। चष्टन की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने सात–वाहनों को पराजित कर पश्चिमी समुद्र तट के सभी बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया। पृष्ठभाग पर चित्रांकित चैत्य सातवाहन मुद्राओं का अनुकरण है। जीवदामन के समय से सिक्कों पर तिथि का अंकन प्राप्त होने लगता है, जिससे भारतीय इतिहास की घटनाओं के काल निर्धारण में बहुत सहायता मिली।

तिथि अंकन की इस परम्परा को चन्द्रगुप्त द्वितीय ने भी अपनी रजत मुद्राओं पर अपनाया। रूद्रसिंह प्रथम के समय से राजा की आकृति में मूंछें भी अंकित की जाने लगीं। पृष्ठभाग पर चैत्य, अर्द्धचन्द्र, तारे, बिन्दु समूह, लहरदार लाइनें आदि का अंकन पूर्ववत होता रहा। ताँबे की मुद्राओं के अग्रभाग पर वृषभ, हाथी, त्रिशूल, कुठार, घोड़ा, वाण, वज्र तथा पृष्ठभाग पर चैत्य, चन्द्र, घेरे में वृक्ष, स्तम्भशीर्ष आदि का चित्रांकन प्राप्त होता है। शकों की भांति पह्लव सिकके भी यूनानियो के अनुकरण पर बनाये गये लेकिन साथ–साथ भारतीय तत्वों के अनुकरण से स्वयं को न रोक सके। पह्लव पह्लव शासक गोण्डोफर्नीज द्वारा जारी सिक्कों के अग्रभाग पर दाहिना हाथ बाहर निकाले घोड़े पर सवार राजा, इसके पीछे माला लिए उड़ती हुई निके का चित्रांकन है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस बेसिलिओन मेगालाउ इण्डोफराउ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर दाहिने हाथ त्रिशूल तथा बांयें हाथ में ताड़पत्र लिए शिव का चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस रजरस त्रतरस देवव्रतस गुद्रफरस" लेखांकित है। देवव्रत का लेखांकन सामान्यतया किया गया है लेकिन इसका प्रयोग किस भाव से हुआ है, इसका निश्चित आकलन नहीं किया जा सका है।[31] इसी शासक के एक अन्य सिक्के के पृष्ठभाग पर बांयें हाथ में त्रिशूल तथा दाहिना हाथ बाहर निकाले शिव का अंकन प्राप्त होता है। अधिकतर यह देखने में आया है कि हिन्द–यवन, शक, पह्लव आदि के सिक्कों पर जिन देवी–देवताओं जैसे शिव, विष्णु, लक्ष्मी आदि का अंकन हुआ है, यूनानी या ईरानी देवतओं की भांति इन्हें भी दर्शाया गया है।

प्रथम शताब्दी ई. में किसी समय कुषाणों के उत्थान के साथ ही पश्चिमोत्तर शक, पह्लव शासकों का प्रभुत्व समाप्त हो गया।[32] कुषाण मुद्राओं के अग्रभाग पर शासक का चित्रांकन लम्बे कोट पायजामा तथा उँचे बूट के साथ वेदी पर आहुति देते हुए किया गया है। उपरोक्त वेश–भूषा पार्थियन सिक्कों से ग्रहण की गयी प्रतीत होती है। कुछ ऐसी ही वेश–भूषा प्रारम्भिक गुप्त मुद्राओं पर भी देखने को मिलती है। कुषाण मुद्राओं पर विभिन्न यूनानी, रोमन, ईरानी तथा

भारतीय देवी–देवताओं का अंकन प्राप्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुषाण शासक भारतीय देवी–देवताओं से अत्याधिक प्रभावित थे। यह देवी–देवता कुषाण शासकों के अन्तःकरण में स्थान बना चुके थे। सम्भवतः यही कारण है कि उनके द्वारा जारी सिक्कों का मुख्य विषय यही देवी–देवता थे। विम कैडफिसेस के सिक्कों पर प्रभामण्डल युक्त नन्दी के सहारे खड़े दाहिने हाथ में लम्बा त्रिशूल लिये शिव का चित्रांकन है।[33] कुछ सिक्कों पर उनके सिर से अग्नि की ज्वालायें निकलती दर्शायी गयी हैं। शिव के बांयें हाथ में लम्बा त्रिशूल और परशु का अंकन प्राप्त होता है।[34] भाष्कर चट्टोपध्याय का मानना है कि कनिष्क के सिक्कों पर शिव का नाम "ओइशो" प्राप्त होता है। कनिष्क के कुछ सिक्कों पर ओइशो अथवा शिव को चतुर्भुज रूप में चित्रांकित किया गया है। हुविष्क की मुद्राओं पर भी शिव का चित्रांकन कनिष्क के सिक्कों जैसा ही है। लेकिन वासुदेव की मुद्राओं पर शिव का अंकन विविध रूपों में मिलता है, जैसे उसकी कुछ मुद्राओं पर चार भुजाओं वाले त्रिमुखी शिव का चित्रांकन है जिन्हें पाश, त्रिशूल, कमण्डल व सिंह–चर्म लिये प्रदर्शित किया गया गया है। इसके पीछे नन्दी का भी अंकन प्राप्त होता है। कुछ सिक्कों पर दो भुजाओं वाले त्रिमुखी शिव का अंकन प्राप्त होता है, जिनके हाथ में माला व त्रिशूल हैं, नन्दी का अंकन पूर्ववत है। कुछ सिक्कों पर दो भुजाओं वाले एक मुखी शिव का चित्रांकन प्राप्त होता है शेष पूर्ववत है। हुविष्क की मुद्राओं पर ओम्मा अथवा पार्वती का चित्रांकन शिव के साथ हुआ है। हुविष्क की मुद्राओं पर शिवपुत्र कार्तिकेय व गणेश का भी चित्रांकन मिलता है। हुविष्क ने अपनी ताम्र मुद्राओं पर धनुष चलाते गणेश की भी चित्रांकन करवाया है। कुषाण मुद्राओं पर उपरोक्त शैव धर्म से सम्बन्धित चित्रांकन से निष्कर्ष निकलता है कि कुषाणों का शैव धर्म से गहरा सामंजस्य स्थापित हो चुका था।

विम कैडफिसेस भारतीय संस्कृति से अत्याधिक प्रभावित था, उसने अपनी मुद्राओं पर शिव के अंकन को प्रमुखता दी। विम शिव का परमभक्त था उसने "महेश्वर" की उपाधि भी धारण की

थी।[35] इसके सिककों पर सर्व प्रथम राजा के दैवीय स्वरूप को प्रदर्शित किया गया, उसे बादलों से निकलता हुआ और उसके कन्धों से ज्वालायें निकलती हुई दर्शायी गयी हैं। विम कैडफिसेस द्वारा जारी कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुट तथा शिरस्त्राण धारण किये राजा का चित्रांकन है, दाहिने हाथ मे वज्र तथा बांयीं ओर गदा है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस ओइमो कैडफिसस" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर प्रभामण्डल युक्त शिव गले में हार धारण किये, दाहिने हाथ में लम्बा त्रिशूल लिए खड़े प्रदर्शित किये गये हैं। उनके पीछे नन्दी का अंकन किया गया है। खरोष्ठी लिपि में "महारजस राजतिराजस सर्वलोग ईश्वरस माहेश्वरस हीमा कडफिसस" लेखांकित है।[36] लगभग इन्हीं विशेषताओं वाली आवक्ष आकृति राजा व शिव शैली, त्रिशूल–परशु शैली, आहुति देता राजा व शिव नन्दी शैली, बादलों पर स्थित राजा व शिव नन्दी आदि शैलियों की मुद्रायें विम कैडफिसेस द्वारा जारी की गयीं। उपरोक्त समस्त मौद्रिक साक्ष्य विम कैडफिसस को शैव धर्मानुयायी इंगित करते हैं। इस शासक के बाद जब कनिष्क सिंहासनरूढ़ हुआ तो इसने अपने प्रारम्भिक सिक्कों पर यूनानी देवताओं का उसके बाद ईरानी देवताओं का तथा अन्तिम दिनों में शिव व महात्मा बुद्ध का चित्रांकन अपने सिक्कों पर करवाया। कनष्कि द्वारा जारी कुछ मुद्राओं पर "ओइशों" लेखांकन के साथ चतुर्भुजी शिव का चित्रांकन प्राप्त होता है, जिनके हाथों में पाश, डमरू, त्रिशूल तथा कमण्डल दर्शाया गया है।[37] कुछ सिक्को पर दो भुजाओं वाले शिव का अंकन प्राप्त होता है, जिनके दाहिने हाथ में त्रिशूल तथा बांयें हाथ में कमण्डल है।[38] कनिष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर शाक्यमुनि बुद्ध का चित्रांकन प्राप्त होता है। कुछ सिक्कों पर प्रभामण्डल युक्त बुद्ध का दाहिना हाथ "वरदमुद्रा" में तथा बांयें हाथ में भिक्षा पात्र प्रदर्शित किया गया है।[39] जबकि कुछ सिक्कों पर महात्मा बुद्ध का चित्रांकन व्याख्याता के रूप में किया गया है। प्रारम्भ में बुद्ध का अंकन मानवीय आकृति में न होकर धर्मचक्र, स्तूप, बोधि वृक्ष चैत्य आदि प्रतीकों के रूप में प्राप्त

होता था। लेकिन सर्वप्रथम बुद्ध की मानवीय आकृति का अंकन कनिष्क की मुद्राओं पर ही प्राप्त होता है। कुषाण सिक्कों पर महात्मा बुद्ध का नाम "बोदो" लेखांकित है।

कनिष्क के बाद हुविष्क शासक बना, इसने कनिष्क से भी अधिक देवी–देवताओं का चित्रांकन अपने सिक्कों पर किया। हुविष्क के तांबे के सिक्कों[40] के पृष्ठभाग पर यूनानी भाषा में घसीटकर "ओसना" ;व्ेंदव्द्ध लेखाकित है। इसके साथ ही एक देवता का चित्रांकन है, जिसके चार हाथ हैं जिनमें वज्र, त्रिशूल, कमण्डल तथा माला है। दो भुजायें ऊपर की ओर, नीचे की दाहिनी भुजा आगे की ओर तथा बांयां हाथ कमर पर रखे हुए दर्शाया गया है।[41] बी. चट्टोपाध्याय के अनुसार इस आकृति में ऊपर की दो भुजायें विष्णु की आकृति वाली भुजाओं से समानता रखती हैं। विष्णु के चित्रांकन में शेष दो भुजायें भी नीचे की ओर दर्शायी गयी हैं।[42] यह आकृति विभिन्न धार्मिक रीति रिवाजों को एक करके अपने में समाहित किये हुए है।[43] कनिष्क तथा हुविष्क के सिक्कों पर ईरानी सूर्य देवता मिहिर दाहिना हाथ आगे बढ़ाये हुए और बांयां हाथ कमर पर रखे चित्रांकित हैं। यह चित्रांकन ठीक उसी तरह है जैस ओसना (विष्णु) निचली दोनों भुजाओं का चित्रांकन हुविष्क के सिक्के पर है। इन सिक्कों के द्वारा विष्णु तथा मिहिर में महत्वपूर्ण सामंजस्य प्रदर्शित किया गया है।[44] हुविष्क ने अपने सोने के सिक्कों के माध्यम से विभिन्न धार्मिक रीति रिवाजों के मध्य सामंजस्य स्थापित किया।[45] हुविष्क के उपरान्त वासुदेव कुषाण शासक हुआ। वासुदेव के एक सोने के सिक्के का प्रकाशन बी.एन. चतुर्वेदी ने 1987 में किया।[46] इस सिक्के पर चतुर्भुजी आकृति वाले देवता का चित्रांकन है जो चुस्त कपड़े, हार, कान में बाले और टोपी धारण किये है। ऊपर की उठी हुई बांयीं भुजा में चक्र, नीचे वाली बांयीं भुजा में शंख, नीचे की दाहिनी भुजा में गदा तथा बांयीं भुजा में पाश या डमरू जैसी कोई बस्तु दर्शायी गयी है। इस दैव आकृति के सिर के पीछे यूनानी भाषा में 'बाजोदेव' ;ठंवकमवद्ध लेखांकित है।[47] बाजोदेव का तात्पर्य वासुदेव से है और वासुदेव का शाब्दिक अर्थ होता है धन एवं समुद्धि का देवता।[48] हुविष्क के

उपरोक्त सिक्कों के विश्लेषण उसका वैष्णव धर्म से तादात्म्य स्थापित करते हैं। लेकिन कुछ ऐसे सिक्के भी वासुदेव द्वारा जारी किये गये, जिसमें शिव का चित्रांकन प्राप्त होता है। वासुदेव के एक या दो सिक्के ब्रिटिश संग्रहालय में हैं जिसमें पंचमुखी शिव का चित्रांकन प्राप्त होता है।[49] इसके अतिरिक्त वासुदेव के कुछ अन्य सिक्कों के पृष्ठभाग पर दो भुजाओं वाले शिव का चित्रांकन है जिनके दाहिने हाथ में जाल तथा बांयें हाथ में लम्बा त्रिशूल चित्रांकित है।[50] इसी सिक्के के अग्रभाग पर बाजोदेव को चित्रांकित किया गया है जो नुकीले टोपी तथा बांयें हाथ में लम्बा त्रिशूल धारण किये हैं।[51] इन समस्त साक्ष्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन शासकों ने हिन्दू धर्म से घनिष्ठता पूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे। शिव, वासुदेव, शाक्यमुनि बुद्ध या बोदो, कार्तिकेय आदि देवगणों को कुषाण जैसे विदेशी शासकों द्वारा अपने सिक्कों पर प्रमुखता पूर्वक स्थान देना इसका प्रमाण माना जा सकता है।

कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद गुप्त साम्राज्य स्वर्ण काल जैसी विशेषता लिए प्राचीन भारतीय इतिहास में उभरकर सामने आया। चूँकि कुषाणों के बाद ही गुप्त शासकों ने शासन सम्भाला था, इसलिए वे कुषाणों के मौद्रिक प्रभाव से बच न सके। उनकी प्रारम्भिक मुद्राओं पर सर्वाधिक कुषाण मुद्राओं का प्रभाव दिखायी देता है। कुषाण शासकों की भाँति गुप्त सम्राट भी बन्द गले का कोट पायजामा तथा बूट धारण किये खड़े होकर अग्नि में आहुति देते हुए, सिक्कों पर चित्रांकित किये गये हैं। जिस प्रकार विदेशी मुद्राओं पर आरदोक्षो को सिंहासन पर बैठे हुए हाथ में कार्नकोपिया लिए चित्रांकित किया गया है, ठीक उसी प्रकार गुप्त कालीन सिक्कों पर सिंहवाहिनी लक्ष्मी के हाथ में कार्नकोपिया प्रदर्शित किया गया है। कुषाण मुद्राओं पर यूनानी लिपि में लेखांकन प्राप्त होता है, गुप्त मुद्रा शिल्पियों ने उसका अर्थ समझे बिना अपनी मुद्रा पर अंकित कर लिया है जैसे– समुद्रगुप्त की ध्वजधारी शैली की मुद्रा के अस्पष्ट यूनानी अक्षर। गुप्त शासकों के सिक्कों पर उनका नाम कुषाण शासकों के नाम की भाँति बाँह के नीचे लेखांकित है।

गुप्त कालीन रजत सिक्कों पर शक मुद्राओं के समान शासक की आवक्ष आकृति, नाम तथा संम्वत का अंकन प्राप्त होता है। इनकी मुद्राओं का गोल आकार एवं 33 ग्रेन का होना भी शक मुद्राओं का ही अनुकरण है। स्मिथ का मत है कि गुप्त कालीन सिक्कों पर गरूड़ तथा मोर का चित्रांकन रोमन अनुकरण पर किया गया है।[52] उनका कहना है कि कुमारगुप्त के सिक्कों पर मोर की आकृति जूलिया आगस्टा के सिक्कों का अनुकरण है। लेकिन अल्टेकर इसको स्वीकार नहीं करते हैं। कुमारगुप्त का नामकरण शिवपुत्र कार्तिकेय के नाम पर हुआ है, जिनका वाहन मोर है इसी कारण इसके सिक्कों पर मोर के चित्रांकन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ऐसी परिस्थिति में कुमारगुप्त के चाँदी के सिक्कों पर पंखयुक्त मोर को जूलिया आगस्टा के सिक्कों का अनुकरण मानना तर्कसंगत नहीं है।[53] सत्यता जो भी हो लेकिन उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन देशी एवं विदेशी सिक्कों में अपूर्व सामंजस्य विद्यमान था।

चन्द्रगुप्त प्रथम की राजा–रानी शैली की मुद्रा में शासक को कुषाण वेश–भुषा में चित्रांकित किया गया है। राजा कोट, पतलून, टोपी व आभूषणों से सुसज्जित है और रानी साड़ी, ओढ़नी, कुण्डल, हार के साथ चित्रांकित है। इस सिक्के के पृष्ठभाग पर नालयुक्त कमल लिए लक्ष्मी का अंकन भी प्राप्त होता है।[54] एलन[55] का मानना है कि यूनानी शासक एण्टीमेकस तथा यूक्रेतिद ने स्मृति स्वरूप कुछ सिक्के जारी किये थे, उसी का अनुकरण समुद्रगुप्त ने भी किया। समुद्रगुप्त ने अपने पिता चन्द्रगुप्त प्रथम की स्मृति में इन सिक्कों को जारी किया होगा। यद्यपि अल्टेकर इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं। उनका कहना है कि यदि यह मुद्रा समुद्रगुप्त ने जारी की होती तो अन्य सिक्कों की भाँति वह अपना नाम भी अंकित करवाता जैसा कि स्मृति सिक्कों पर यूनानी शासकों ने अपने नाम का उल्लेख किया था। अतः यह मुद्रा समुद्रगुप्त ने नहीं बल्कि चन्द्रगुप्त प्रथम ने जारी की थी।[56] लेकिन इन सिक्कों पर चित्रांकित राजा की वेश–भूषा

कुषाण शासकों से मेल खाती है। कुषाण सिक्कों की विशेषता वाली काच की मुद्रा के अग्रभाग पर राजा का चित्रांकन वेदी पर आहुति देते हुए किया गया है। राजा लम्बा कोट, पायजामा, टोपी व आभूषण धारण किये दर्शाया गया है। पृष्ठभाग पर कार्नकोपिया लिये लक्ष्मी का चित्रांकन है। सीथियन सिक्कों में राजा को ध्वजा के साथ चित्रांकित किया गया है। इसी विशेषता का अनुकरण समुद्रगुप्त की ध्वजधारी शैली की मुद्राओं[57] पर मिलता है। इन सिक्कों के अग्रभाग पर कोट, पायजामा, बूट, टोपी व आभूषण धारण किये राजा का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में गरूड़ ध्वज तथा दाहिने हाथ में वेदी पर आहुति देते हुए दर्शाया गया है। पृष्ठभाग पर विन्दुओं के वृत्त में प्रभामण्डलयुक्त सिंहसनारूढ़ लक्ष्मी बांयें हाथ में कार्नकोपिया व दाहिने हाथ में पाश लिए चित्रांकित हैं। इस मुद्रा पर कुछ अस्पष्ट यूनानी अक्षर भी लेखांकित हैं, जो गुप्त एवं कुषाण मुद्राओं के अन्तर्सम्बन्धों के द्योतक हैं। समुद्रगुप्त ने कुछ ऐसी ही विशेषता वाली धनुर्धारी शैली[58] की मुद्रायें जारी कीं। इन मुद्राओं के अग्रभाग पर धनुर्धारी राजा की आकृति की बांयीं ओर फीते के साथ गरूड़ध्वज तथा बांयें हाथ के नीचे समुद्रगुप्त लेखांकित है। पृष्ठभाग पर चौकी पर बैठी लक्ष्मी चित्रांकित हैं, जिनके बांयें हाथ में कार्नकोपिया तथा दाहिने हाथ में पाश है। इन सिक्कों की लगभग समस्त विशेषतायें कुषाण सिक्कों से मेल खाती हैं। यहाँ पर कुषाणों की वेश–भूषा का अनुकरण तो किया ही गया है, साथ ही साथ हाथ के नीचे राजा के नाम का लेखांकन भी कुषाण सिक्कों की विशेषता रही है। इसी प्रकार समुद्रगुप्त द्वारा जारी की गयी परशु शैली[59], अश्वमेध शैली[60] व अन्य प्रकार के सिक्कों पर भी गुप्त एवं कुषाण मुद्राओं के मध्य सामंजस्य सरलतापूर्वक देखा जा सकता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा जारी धनुर्धारी शैली[61], पर्यंक शैली[62], छत्र शैली[63], सिंहनिहन्ता शैली[64], अश्वारोही शैली[65] की मुद्राओं पर भी कुछ विदेशी तत्व अवश्य प्राप्त होते हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा जारी किये गये चाँदी के सिक्के पश्चिमी क्षत्रपों के उन सिक्कों के अनुकरण पर ही निर्मित हुए थे, जिनका प्रचलन क्षेत्र पश्चिमी भारत था। चन्द्रगुप्त

द्वितीय के चाँदी के सिक्कों[66] के अग्रभाग पर शासक का चित्रांकन क्षत्रपों के समान गले में कालर के साथ किया गया है। राजा की ऊँची नाक, लम्बे बाल तथा मूँछों का भी अंकन प्राप्त होता है। कहीं–कहीं यूनानी अक्षरों के अवशेष भी सिक्कों पर मिल जाते हैं। शक सिक्कों की भाँति चन्द्रगुप्त द्वितीय की रजत मुद्राओं पर भी उनके जारी होने का वर्ष शासक की आकृति के सिर के पीछे लेखांकित है। अन्तर केवल इतना है कि शकों का तिथि अंकन शक सम्वत् में तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय की मुद्राओं पर गुप्त सम्वत् में प्राप्त होता है। इन रजत सिक्कों के पृष्ठभाग पर शक सिक्कों के समान विन्द समूह, अर्द्धचन्द्र, लहरदार लाइनें प्राप्त हाती हैं। लेकिन तीन मेहराबों वाले चैत्य के स्थान पर गुप्त मुद्राओं पर राजचिह्न गरूड़ का चित्रांकन है। देशी एवं विदशी तत्वों के मध्य सामंजस्य मौखरियों व हूणों के काल में देखने को मिलता है लेकिन यह मुद्रायें विशेष उल्लेखनीय नहीं प्रतीत होती हैं।

पूर्व प्रचलित मुद्रा नीति में परिवर्तन सम्भव न रहा होगा। लेकिन गुप्त कालीन सिक्कों में स्कन्दगुप्त तथा कुमारगुप्त व कुछ सीमा तक चन्द्रगुप्त द्वितीय से शनैः शनैः परिवर्तन करके उनमें भारतीयता लाने का प्रयास किया जाने लगा।[67] रोमन तथा कुषाण सिक्कों पर कार्नकोपयि लिए देवी आरदोक्षो का अंकन सामान्तया होता था।[68] जिसे गुप्तों ने सिंहवाहिनी दुर्गा के रूप में परिवर्तित कर दिया या उन्हे कमलासन लक्ष्मी का रूप प्रदान कर दिया गया।[69] कार्नकोपिया का स्थान कमलपुष्प ने ले लिया। ध्वजा को परशु या धनुष के रूप में परिवर्तित कर भारतीयता लाने का प्रयास किया गया। सीथियन ऊँची टोपी का स्थान भारतीय उष्णीश ने ले लिया। लेकिन विदेशी कोट, पतलून कई पीढ़ियों तक समय–समय पर परिलक्षित होता रहा।

सन्दर्भ

1. आर.बी. ह्वाइटहेड – "कैटलॉग आफ क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम, वाल्यूम प् इण्डो–ग्रीक क्वाइन्स, पृष्ठ –14।
2. उपरिवत् – पृष्ठ –16।
3. उपरिवत् – पृष्ठ –17।
4. उपरिवत् – पृष्ठ –18।
5. उपरिवत् – पृष्ठ –18।
6. मार्शल – " मोहनजोदड़ों एण्ड इन्डस वैली", पृष्ठ –63–65।
7. वैदिक इण्डेक्स – प् –पृष्ठ –33।
8. अथर्ववेद – ट .4.3।
9. ऐतरेय ब्राह्मण – टप् .30.33।
10. छांदोग्य उपनिषद – टप्प् .5.3।
11. ए.के. नारायण – जे एन एस आई, ग्ग्ए पृष्ठ –33।
12. जे.एन.एस.आई, ग्ग्ए पृष्ठ –74।
13. उपरिवत् – पृष्ठ –75।
14. उपरिवत् – पृष्ठ –75।
15. उपरिवत् – पृष्ठ –75,76।
16. टी.ए. राव – "एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आई कोनोग्राफी" – वाल्यूम पए पृष्ठ –20।

    वाल्यूम– प्प् पृष्ठ –44,45।
17. जे.एन. बनर्जी – डी एच आई, पृष्ठ –130।
18. डी.सी. सरकार – "सेलेक्ट इन्सक्रिप्शनस", पृष्ठ –90।

19. आर.बी. ह्वाइटहेड – ″कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम, वाल्यूम– ए इण्डो–ग्रीक क्वाइन्स, पृष्ठ –59।

20. उपरिवत् – पृष्ठ –61।

21. उपरिवत् – पृष्ठ – च्ज ,1,8।

22. बी.एन. बनर्जी – ″जे.एन.एस.आई., ग्स्प्प्ए पृष्ठ –44।

23. जे.एन.एस.आई, स्प्.प्प्ए पृष्ठ –36।

24. उपेन्द्र ठाकुर – ″मिन्ट एण्ड मेन्टिंग इन इन्डिया, पृष्ठ –118।

25. एलन – बी एम सी, पृष्ठ –187।

26. उपरिवत् – पृष्ठ –185।

27. विष्णुधर्मोत्तर पुराण – (गीता प्रेस), ट 31।

28. स्मिथ – ″इन्डियन म्यूजियम कैटलॉग″ वाल्यूम ए च.102, 39, 45।

29. जे.एन. बनर्जी – ″डेब्लपमेन्ट ऑफ हिन्दू आई कोनोग्राफी″, पृष्ठ –197।

30. पी.एल. गुप्ता – ″जे.एन.एस.आई.″, जिल्द 28 (प्), पृष्ठ –220–227।

31. पी.एल. गुप्ता – ″भारत के पूर्व–कालिक सिक्के″, पृष्ठ –140।

32. उपरिवत् – पृष्ठ –141।

33. आर.बी. ह्वाइटहेड – ″कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम, वाल्यूम– ए पृष्ठ –183।

34. उपरिवत् – पृष्ठ –183।

35. उपरिवत् – पृष्ठ –183।

36. उपरिवत् – पृष्ठ –183।

37. उपरिवत् – पृष्ठ –192।

38. उपरिवत् – पृष्ठ –192।

39. कनिंघम – बी.एम.सी., च्स्टए पृष्ठ –193।

40. बी. चट्टोपध्याय – ''द ऐज आफ द कुषानाज : ए न्यूमिस्मैटिक स्टडी'', पृष्ठ–176।

41. जे.एन. बनर्जी – डी एच आई, च्सण्ग थ्पह.10।

42. बी. चट्टोपध्याय – ''क्वाइन्स एण्ड आईकान्स : ए स्टडी ऑफ माइथस एण्ड सिम्बल्स इन इन्डियन न्यूमिस्मेटिक आर्ट'', पृष्ठ –196।

43. बी. चटर्जी – जे.एन.एस.आई, स्प्ए पृष्ठ –181।

44. उपरिवत् – पृष्ठ –181।

45. ओ.पी. सिंह – ''रिलिजन एण्ड आइनो ग्राफीआन अर्ली इन्डियन क्वाइन्स'', पृष्ठ–123।

46. बी.एन. बनर्जी – ''जे.एन.एस.आई., पृष्ठ –46–47।

47. उपरिवत् – पृष्ठ –46।

48. बी.एन. मुखर्जी – जे.एन.एस.आई., पृष्ठ –47।

49. कनिंघम – ''क्वाइन्स ऑफ द कुषान्स न्यूमिस्मैटिक क्रानिकल'', च्स.ग्प्टए 7,8,9

50. आर.बी. ह्वाइटहेड – ''कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम'', वाल्यूम प्ए पृष्ठ –208।

51. उपरिवत् – पृष्ठ –208।

52. स्मिथ – ज.रा.ए.सो – 1889, पृष्ठ –24।

53. ए.एस. अल्टेकर – ज.रा.ए.सो., पृष्ठ –22।

54. अजीत रायजादा – भारतीय सिक्कों का इतिहास, पृष्ठ –85–86।

55. एलन – ''कैटलॉग आफ द क्वाइन्स ऑफ गुप्ता डायनेस्टी'', पृष्ठ –114–118।

56. ए.एस. अल्टेकर – ''न्यू सप्लीमेन्ट'', पृष्ठ –105. प्प.

57. एलन – "कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स ऑफ गुप्ता डायनेस्टी", पृष्ठ –1–5।

58. उपरिवत् – पृष्ठ –6–11।

59. उपरिवत् – पृष्ठ –12–14।

60. उपरिवत् – पृष्ठ –21–22।

61. उपरिवत् – पृष्ठ –25–32।

62. उपरिवत् – पृष्ठ –33–34।

63. उपरिवत् – पृष्ठ –34–37।

64. उपरिवत् – पृष्ठ –38–44।

65. उपरिवत् – पृष्ठ –45–49।

66. उपरिवत् – पृष्ठ –49–51।

67. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –84।

68. पी.एल.गुप्ता व सरोजनी श्रीवास्तव – "गुप्ता गोल्ड क्वाइन्स इन भारत कला भवन", पृष्ठ –3।

69. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –84।